जो जीव देते सकुचों, तो क्यों रहे मेरा धरम।
विरहा आगे क्या जीव, ए कहत लगत मोहे सरम।। ६ ।।

ऐसी हालत में यदि मैं अपने जीव को कुर्बान करने में संकोच करूं तो मेरा धर्म कैसे रहेगा? विरह की आग के सामने जीव है ही क्या? ऐसा कहने में मुझे शर्म लगती है।

माया काया जीवसों, भान भूंन टूक कर।
विरहा तेरा जिन दिस, मैं वारूं तिन दिस पर।। ७ ।।

माया, शरीर और जीव को टुकड़े करके भूनकर आपकी उस दिशा पर कुर्बान कर दूं, जिस दिशा से मुझे आपका विरह मिला।

जब आह सूकी अंगमें, स्वांस भी छोड़्यो संग।
तब तुम परदा टाल के, दियो मोहे अपनो अंग।। ८ ।।

जब मेरे अंग से 'हाय धनी' की रट खत्म हो गई और सांस ने भी साथ छोड़ दिया, तब आपने मेरे शरीर का तामस हटाकर (शरीर का कष्ट हटाकर) मुझे स्वीकार किया और सनन्ध की वाणी बख्शीश में दी।

मैं तो अपनो दे रही, पर तुमहीं राख्यो जिउ।
बल दे आप खड़ी करी, कछू कारज अपने पिउ।। ९ ।।

मैंने तो निराशा में ही अपने आपको खत्म कर दिया था, परन्तु आपने ही मुझे जीवित रखा। आपने अपने काम के लिए (ब्रह्मसृष्टि को घर ले जाने का काम) ही अपनी ताकत (सनन्ध वाणी) देकर फिर से खड़ा कर दिया।

जीवरा भी मेरा रख्या, तुम कारज भी कारन।
आस भी पूरी सोहागनी, वृध भी राख्यो विरहिन।। १० ।।

हे धनी! आपने अपने काम के वास्ते मुझे जीवित किया और मेरी चाहना भी पूरी की तथा मेरी लाज भी रखी।

तुम आए सब आइया, दुख गया सब दूर।
कहे महामती ए सुख क्यों कहूं, जो उदया मूल अंकूर।। ११ ।।

हे धनी! अब आप आ गए, तो मेरे विरह के सब दुःख भूल गए और सब कुछ मिल गया। इन सुखों का कैसे वर्णन करूं? मुझे तो ऐसे लगा जैसे परमधाम में आपके साथ रहते थे वैसे ही यहां हूं।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। १९८ ।

सनन्ध विरह के प्रकास की

एह बात मैं तो कहूं, जो केहने की होए।
एह इमामें रीझ के, दया करी अति मोहे।। १ ।।

हे धनी! मुझे इतनी खुशी हो गई है कि मैं कह भी नहीं सकती। यह तो इमाम मेंहदी श्री राजजी महाराज ने खुश होकर मेरे ऊपर दया की और मुझे यह सनन्ध की वाणी बख्शीश में दी।

Nijanand App

सुनियो बानी मोमिनों, दीदार दिया हकें जब।
परदा सारा उड़ गया, हुआ उजाला सब।। २ ।।

हे मेरे मोमिनो! मेरी बात सुनो। मेरी निराश हालत में जब श्री राजजी महाराज ने दर्शन दिया और सनन्ध वाणी बख्शीश में दी तो कुरान के सारे परदे उड़ गए और सब अर्थ खुल गए।

कह्या जो नबिऐं इमाम, तिन खुद खोले द्वार।
दरवाजे सब खोल के, मोहे देखाया पार।। ३ ।।

रसूल साहब ने जो कहा था कि इमाम मेंहदी आकर कुरान के गुझ (गुह्य) रहस्य खोलेंगे, वही इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) आ गए हैं और उन्होंने सारे रहस्यों को खोलकर मुझे अर्शे अजीम (परमधाम) दिखाया।

कर पकर बैठाए के, आवेस दियो मोहे अंग।
ता दिन थें मेहेर पसरी, पल पल चढ़ते रंग।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज ने ही मेरे जर्जर शरीर में आवेश की शक्ति देकर बिठाया और उसी दिन से दिन प्रति दिन मेहर (कृपा) बरस रही है और क्षण-क्षण में वाणी उतर रही है।

मिलाप हुआ जब मेंहेंदी से, तब कह्या महामती नाम।
अब मैं हुई जाहेर, देख्या वतन बका धाम।। ५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि जब मेरा इमाम मेंहदी से मिलाप हुआ तब से महामति का नाम मिला और अपने अखण्ड घर को देखकर महामति के नाम से सबमें जाहिर हुई।

बात कही सब वतन की, सो निरखे मैं निसान।
नजरों सब जाहेर हुआ, उड़ गया उनमान।। ६ ।।

इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) ने घर की बातें बताईं और घर के सब निशान जाहिर हो गए। मेरी अटकल उड़ गई और सब कुछ स्पष्ट हो गया।

आपा मैं पेहेचानिया, सनमंध हुआ सत।
ए मेहेर जुबां क्यों कर कहूं, गई मूल से गफलत।। ७ ।।

मैंने अपने आपको पहचाना। अब पता चला कि मैं परब्रह्म की अंगना हूं। इस मेहर का अब मैं कैसे वर्णन करूं? क्योंकि अब शुरू से आखिर तक सब संशय मिट गए हैं।

ए झूठी अबलों न जानती, क्या है क्यों उतपत।
सो अब सब विध समझी, यों होसी फना कुदरत।। ८ ।।

अभी तक मैं नहीं जानती थी कि यह संसार क्या है और कैसे बनता है? अब मैं सारी हकीकत को समझ गई हूं और यह भी जान गई हूं कि इस माया का प्रलय कैसे होगा।

मुझे जगाई जुगतसों, सुख दियो अंग आप।
कंठ लगाई कंठसों, या बिध कियो मिलाप।। ९ ।।

बड़े तरीके से धनी ने मुझे जगाया तथा अपना अंग देकर सुख दिया। उन्होंने मुझे गले से लगाया और बड़े प्यार से लिपटा लिया।

Nijanand App

खासी जान खेड़ी जिमी, जल सींचिया खसम।
बोया बीज वतन का, सो ऊग्या वाही रसम।। १० ।।

अब मेरी हृदय रूपी जमीन को अच्छा समझकर (खेड़ी) जोता तथा प्रीतम ने प्रेम के जल से सींचकर वतन के ज्ञान का बीज (सनन्ध वाणी) बोया। उसी ने विशाल वाणी का रूप धारण कर लिया।

बीज रूह संग निज बुध, सो ले उठिया अंकूर।
या जुबां इन अंकूर को, क्यों कर कहूं सो नूर।। ११ ।।

इस बीज को मेरे हृदय में आत्मा की जागृत बुद्धि का साथ मिला और उसी तरह से अंकुर फूटे। अब इस जबान से इसके (सनन्ध वाणी के) प्रकाश का वर्णन कैसे करूं?

नातो एह बात जो गुझ की, सो क्यों होवे जाहेर।
पर मोमिन प्यारे मुझ को, सो कर न सकूं अंतर।। १२ ।।

नहीं तो अभी तक कुरान के रहस्य छिपे हुए थे और जाहिर नहीं हो पा रहे थे, परन्तु मेरे मोमिन मुझे प्यारे हैं, इसलिए मैं उनसे कोई भी चीज छिपा नहीं सकती।

तो भी कहूं नेक नूर की, कछुक इसारत अब।
पीछे तो जाहेर होएसी, तब दुनी मिलसी सब।। १३ ।।

फिर भी इस ज्ञान के प्रकाश की कुछ बातें अब बताती हूं। पीछे तो इस वाणी के जाहिर होने से ही सारी दुनियां मिलकर आएगी।

ए जो विरहा बीतक कही, इमाम मिले जिन सूल।
अब फेर कहूं निज नूर की, जासों पाइए माएने मूल।। १४ ।।

हे मोमिनो! यह मैंने अपने विरह की तथा इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) के मिलने की हकीकत को कहा है। अब मैं दुबारा अपनी जागृत बुद्धि से बताती हूं जिससे मूल हकीकत के मायने खुल जाएंगे।

सुनियो रूहें मोमिनों, जो इन मासूक की विरहिन।
जो चाहे मेहेंदी महंमद को, मैं ताए कहूं वचन।। १५ ।।

हे मेरी परमधाम की रूह मोमिनो! तुममें भी जो कोई मेरे प्रीतम के विरह में तड़पती है और जो मुहम्मद मेंहदी से मिलना चाहती है उसके लिए मैं यह वचन कह रही हूं।

ए विरहा लछन मैं कहे, पर नाहीं विरहा ताए।
या विध विरहा उद्दम की, जो कोई किया चाहे।। १६ ।।

यह तो मैंने विरह के लक्षण बताए हैं, पर तुम्हारे अन्दर अभी विरह नहीं है (धनी की पहचान नहीं है)। यदि तुममें से कोई विरह चाहता हो तो उसका यह उद्यम (तरीका, उपाय) है।

ज्यों ए विरहा उपज्या, ए नहीं हमारो धरम।
विरहिन कबूं न करे, यों विरहा अनूकरम।। १७ ।।

जिस तरह से यह विरह उत्पन्न हुआ, यह अपना धर्म नहीं है। विरहिणी तो वही है जो विरह की नकल नहीं करती और अपनी ही परिपाटी चलाती है।

Nijanand App

विरहा सुनते मासूक का, आह न उड़ गई जिन।
ताए वतन रूहें यों कहे, नाहीं न ए विरहिन।। १८ ।।

प्रीतम के बिछुड़ने की खबर सुनते ही विरहिणी, जिसने अपने जीव को नहीं त्यागा, उसे रूहें कहेंगी कि यह विरहिणी नहीं है।

जो होए आपे विरहनी, सो क्यों कहे विरहा सुध।
सुन विरहा जीव न रहे, तो विरहिन कहां से बुध।। १९ ।।

जो स्वयं वियोग से विरहिणी हो जाती है, वह किसी के सामने अपना दुःख नहीं बताती, क्योंकि विरह को सुनकर जीव नहीं रहता, तो विरहिणी को बुद्धि कहां से आएगी?

पतंग कहे पतंग को, कहां रह्या तूं सोए।
मैं देख्या है दीपक, चल देखाऊं तोहे।। २० ।।

यदि एक पतंगा दूसरे पतंगे को सूचना देता है कि तू कहां सोया पड़ा है? मैंने एक दीपक देखा है। चल, तुझे भी दिखाऊं।

या तो ओ दीपक नहीं, या तूं पतंग नाहें।
पतंग कहिए तिनको, जो दीपक देख झंपाए।। २१ ।।

दूसरा पतंगा जवाब देता है कि या तो वह दीपक नहीं है या तू फिर पतंगा नहीं है। पतंगा तो उसी को कहते हैं जो दीपक को देखते ही अपने आपको उसमें झोंक देता है।

पतंग और पतंग को, जो सुध दीपक दे।
तो होवे हांसी तिन पर, कहे नाहीं पतंग ए।। २२ ।।

एक पतंगा दूसरे पतंगे को यदि सूचना देता है तो उस पर हंसी होती है और सभी कहते हैं यह पतंगा नहीं है।

दीपक देख पीछा फिरे, साबित राख के अंग।
आए देवे सुध और को, ताए क्यों कहिए पतंग।। २३ ।।

दीपक को देखकर यदि वह पीछे लौटता है और अपने आपको कुर्बान नहीं करता है और दूसरों को खबर देता है, तो उसे पतंगा नहीं कहा जाता।

मैं तो बीतक तब कही, जब लई मासूकें उठाए।
जब मैं हुती विरह में, तब क्यों मुख बोल्यो जाए।। २४ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मैं पहले ही कुर्बान हो गई थी, परन्तु जब धनी ने जिन्दा कर दिया (धनी मिल गए) तब मैं यह बता रही हूं। जिस समय मैं विरह में थी तब तो मैं बोल भी नहीं सकी।

ए तो विरहा उपज्या ख्वाब में, चढ़ते चढ़ते पाए।
जब विरहा तामस बढ़्या, तब नींद दई उड़ाए।। २५ ।।

यह विरह तो सपने में धीरे-धीरे बढ़ा (या पता चला) तथा जब विरह में तामस आ गया तो अज्ञानता हट गई।

Nijanand App

विरहा नहीं ब्रह्मांड में, बिना सोहागिन नार।
सोहागिन अंग इमाम को, वतन पार के पार।। २६ ।।

इस ब्रह्माण्ड में ब्रह्मसृष्टि के अलावा और किसी को विरह आता ही नहीं है। सुहागिनी तो श्री प्राणनाथजी के अंग हैं जिनका घर बेहद के पार से परे है।

अब कहूं मोमिन की, जाए कहिए सोहागिन।
ए विरहिन ब्रह्मांड में, हुती ना एते दिन।। २७ ।।

अब मोमिनों की हकीकत कहती हूं जिनको सुहागिनी कहा जाता है। ऐसी ब्रह्म अंगनाएं जो अपने धनी की सुहागिनी हैं, पहले कभी ब्रह्माण्ड में आई ही नहीं।

सो सोहागिन जेतियां, इमाम की विरहिन।
सो अन्तर हकें पकड़ी, ना तो रहे ना तन।। २८ ।।

संसार में जितनी भी सुहागिनी (मोमिन) हैं वह इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) से मिलने में अपने आपको कुर्बान कर देतीं, परन्तु धाम धनी ने ही उनको संसार में जीवित रखा है।

ए सुध दई इमामें, मोहे गुझ कियो प्रकास।
तो ए जाहेर होत है, गयो तिमर सब नास।। २९ ।।

इसकी खबर मुझे इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) ने दी और इस रहस्य को बताया। तभी अन्धकार का नाश हुआ और यह हकीकत सबको जाहिर हुई।

मेहेंदी महंमद प्यारे मोमिन, सो जुबां कह्यो ना जाए।
पर हुआ है मुझे हुकम, सो कैसे कर ढंपाए।। ३० ।।

मुहम्मद मेंहदी को मोमिन बड़े प्यारे हैं। वह इस जबान से कहा नहीं जा सकता, पर मुझे हुक्म हुआ है तो इसे कैसे छिपाऊं?

अनेक करहीं बंदगी, अनेक विरहा लेत।
ए सुख तिन सुपने नहीं, जो हमको जगाए देत।। ३१ ।।

यहां के लोग कई तरह से बन्दगी करते हैं। बहुत लोग विरह भी लेते हैं। इतना करने पर भी जो सुख हमको जगाकर धनी देते हैं वह उनको सपने में भी नहीं मिलते।

छल तें मोहे छुड़ाए के, कछु दियो विरहा संग।
सो भी विरहा छुड़ाइया, देकर अपनो अंग।। ३२ ।।

धाम धनी ने सबसे पहले मुझे माया से छुड़ाया, फिर कुछ विरह दिया। फिर स्वयं अन्दर विराजमान होकर विरह भी छुड़ा दिया।

अंग नूर बुध देय के, कहे तूं प्यारी मुझ।
देने सुख सबन को, हुकम करत हूं तुझ।। ३३ ।।

मेरे अन्दर जागृत बुद्धि देकर धनी ने कहा कि तू मुझे बहुत प्यारी है। अब यह सुख सबको दो, ऐसा मैं हुक्म करता हूं।

Nijanand App

तुम दुख पाया मुझे सालहीं, अब सब सुख तुम हस्तक।
दिया तुमारा पावहीं, दुनियां चौदे तबक।। ३४ ।।

श्री राजजी महामति से कहते हैं कि तुमने जो दुःख उठाया, वह मुझे चुभता है। अब सारे सुख तुम्हारे हाथ में हैं और तुम्हारे देने से ही चौदह लोकों के जीवों को यह मिलेंगे।

दुख पावत हैं मोमिन, सो हम सह्यो न जाए।
हम भी होसी जाहेर, पेहेले सोहागनियां जगाए।। ३५ ।।

मेरे मोमिनों को यदि दुःख होता है तो मेरे से सहन नहीं होता, इसलिए सुहागिनी अंगनाओं को पहले जगाकर मैं भी जाहिर हो जाऊंगा।

सिर ले आप खड़ी रहो, कहे तूं सब सैयन।
प्रकास होसी तुझ से, दृढ़ कर देख मन।। ३६ ।।

मेरे इस ज्ञान को सिर पर धारण करो, हे महामति! तुम सब साथ को बताओ कि इस वाणी का फैलाव तुमसे होगा। मन में दृढ़ता से विचार कर देखो।

तोसों ना कछू अंतर, तूं है सोहागिन नार।
माएने गुझ बताए के, खोल दे पार द्वार।। ३७ ।।

मेरा तुझसे कोई भेद नहीं है और तू तो मेरी सुहागिनी अंगना है, इसलिए सबके सामने कुरान के सब रहस्यों को बताकर पार के दरवाजे खोल दे।

जो कबूं जाहेर ना हुई, सो ए करी तुझे सुध।
अब थें आद अनाद लों, जाहेर होसी निज बुध।। ३८ ।।

जिसकी आज तक किसी को सुध नहीं थी, वह सब जानकारी तुझे दे दी है। अभी से आदि से अन्त तक (शुरू से अन्त तक) जागृत बुद्धि से तुझे सारी जानकारी मिल जाएगी।

तोहे तो सब सुध परी, कहूं अटके नहीं निरधार।
आगे होए सोहागनी, कराओ सबों दीदार।। ३९ ।।

अब तुझे पूर्ण ज्ञान हो गया है, अब तू कहीं नहीं अटकेगी। सब सुहागिनियों के आगे होकर उनको पहचान कराकर दर्शन कराओ।

चौदे तबक कायम होएसी, सब हुकम के प्रताप।
ए सोभा तुझे सोहागनी, जिन जुदी जाने आप।। ४० ।।

तेरे हुक्म से चौदह लोकों को अखण्ड मुक्ति मिलेगी, इसलिए हे महामति! यह शोभा तुझे मिलने वाली है, इसलिए अपने को मेरे से अलग मत समझ।

जो कोई सब्द संसारमें, ना खुले माएने कब।
सो सब खातिर मोमिनों, तूं खोलसी माएने अब।। ४१ ।।

संसार में जितने भी धर्म ग्रन्थ हैं उनके भी भेद अभी तक नहीं खुले थे। अब तू मोमिनों के लिए यह सब खोलेगी।

Nijanand App

तूं देख दिल विचार के, उड़ जासी असत।
सारों के सुख कारने, तू जाहेर भई महामत।। ४२ ।।

तुम मन में विचार करके देखो यह सारा संसार उड़ जाएगा। तुम सबको सुख देने के वास्ते ही, हे महामति! तुम्हें सबके बीच जाहिर किया है।

खेल किया तुम खातिर, सो तूं कहो आगे मोमिन।
पेहेले खेल देखाए के, पीछे मूल वतन।। ४३ ।।

यह खेल तुम्हारे लिए बनाया है। इसकी सब मोमिनों को पहचान करा दो। पहले खेल दिखाना है, फिर बाद में अपने घर चलेंगे।

अंतर रूहोंसों जिन करो, जो मोमिन हैं अर्स घर।
पीछे चौदे तबक में, जाहेर होसी आखिर।। ४४ ।।

हे महामति! तू रूहों से अन्तर मत करना। यह मोमिन अपने घर के हैं। पीछे तो महाप्रलय में यह चौदह लोकों में जाहिर होना है।

बड़ा सुख आगे मोमिन, पीछे सुख संसार।
एक दीन सब होएसी, घर घर सुख अपार।। ४५ ।।

मोमिनों को पहले सब सुख मिलेंगे। उसके बाद संसार वालों को भी (जीव सृष्टि को भी) सभी सुख मिलेंगे। जब एक दीन हो जाएगा, अर्थात् परब्रह्म की पहचान हो जाएगी और एक को मान लेंगे तो घर-घर में बड़ा सुख होगा (योगमाया में)।

तें वचन कहे जो मुख थें, होसी तिनसे बड़ो प्रकास।
असत उड़सी तूल ज्यों, होसी कुफर सब नास।। ४६ ।।

हे महामति! तूने जो अपने मुख से वाणी कही है इसका बड़ा भारी प्रकाश होगा। इससे सारा झूठ का ब्रह्माण्ड आक के तूल (भूए) के समान उड़ जाएगा और सारा कुफ्र नष्ट हो जाएगा।

तूं लीजे नीके माएने, तेरे मुख के बोल।
जो साख देवे रूह अपनी, तो लीजे सिर कौल।। ४७ ।।

हे महामति! जो वाणी तेरे मुख से कही जाए उसके अच्छी तरह मायने लेना, यदि तेरी आत्मा तुझे साक्षी दे तो तू अपने किए कौल (वायदे) पूरे करना।

देत हों बल सबन को, जो हैं असलू मोमिन।
तूं पूछ देख दिल अपना, कर कारज दृढ़ मन।। ४८ ।।

जो मेरे सच्चे मोमिन हैं उन सबको मैं अपना बल दे रहा हूं। तू भी अपने दिल से पूछ और इस तरह मन में दृढ़ता लाकर काम कर।

मैं अंग इमाम को, मोमिन मेरे अंग।
बीच आए तिन वास्ते, करूं सब एक संग।। ४९ ।।

अब महामतिजी कहती हैं कि मैं इमाम मेंहदी की अंगना हूं और मोमिन मेरे अंग हैं। हमारे बीच श्री राजजी महाराज इसीलिए आए हैं। मैं सब सुन्दरसाथ को एक साथ मिलाकर इकट्ठा करूंगी।

Nijanand App